

अभिप्रेरणा (Motivation)

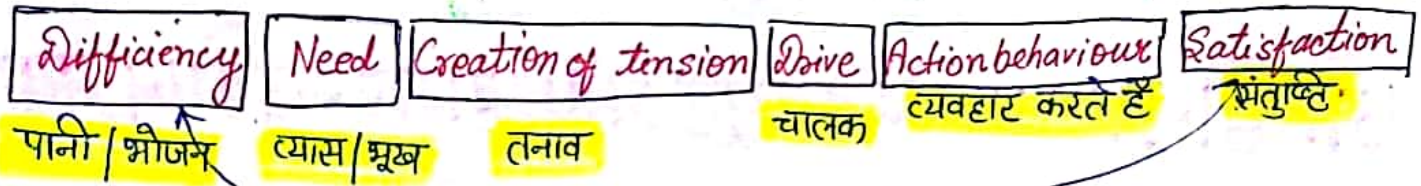
दिन प्रतिदिन की जिन्दगी में हम सभी लोग अनेकों प्रकार के कार्य करते हैं। हम सभी इन कार्यों को क्यों करते हैं? शायद इसलिए करते हैं क्योंकि इसके पीछे कोई न कोई अभिप्रेरणा अवश्य होता है।

हमें प्रतिदिन के अनुभव द्वारा यह भी

ज्ञात होता है कि किसी हाथ को किसी कार्य के प्रति आकर्षित करना या कोई कार्य कराना कितना जटिल एवं चुनौतीपूर्ण होता है। जैसे- सूखे भजन न होंटि गोपाला, चल सकता है कहाँ तन मन के बिना या छोड़े को जलाशय तक या किनारे तक पहुँचाया जा सकता है, किन्तु उसे पानी पीने के लिए विवश नहीं किया जा सकता। *You can drag the horse to water but you can not make him drink.* इससे यह साबित होता है कि प्राणी के भीतर या उसके परिवेश में कुछ ऐसी आकर्षण शक्तियाँ हैं जो उसके व्यवहार को उत्पन्न करती हैं। एक ही परिस्थिति में भिन्न भिन्न व्यक्ति या हाथ अलग-अलग आचरण प्रस्तुत करता है। जैसे आप जानते ही हैं कि कक्षा (Class) के कुछ हाथ शिक्षक के बातों को ध्यानपूर्वक सुनते और रगड़ते हैं, तो कुछ हाथ कहीं और या बैतुकी बातों में लगे रहते हैं। रेस्तराँ या होटल में जाने पर आप स्वयं देख सकते हैं कि किसी को कोई खास स्वाद वाला (इटली, सांभर डोस) भोजन पसंद है तो किसी को अन्य प्रकार (मैमोज, फ्राई राईस) के स्वाद वाला भोजन। इस प्रकार के अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं जैसे- कक्षा में उसी हाथ को ध्यान देने के लिए कभी बार-बार कहना पड़ता है तो किसी अन्य परिस्थिति में वह हाथ इतना ध्यान मग्न हो जाता है कि आपको कुछ कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती। व्यवहार सम्बंधी, परिस्थितिगत सम्बंधी या व्यक्तिगत विभिन्नताओं सम्बंधी व्याख्या करने के लिए मनोवैज्ञानिकों या शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने जिस सम्प्रत्यय (Concept) की व्याख्या किया है उसे (Motivation) अभिप्रेरणा कहते हैं।

'Motivation is the Super highway to learning.'
"अभिप्रेरणा सीखने का राजमार्ग है।"

Basic Motivation process



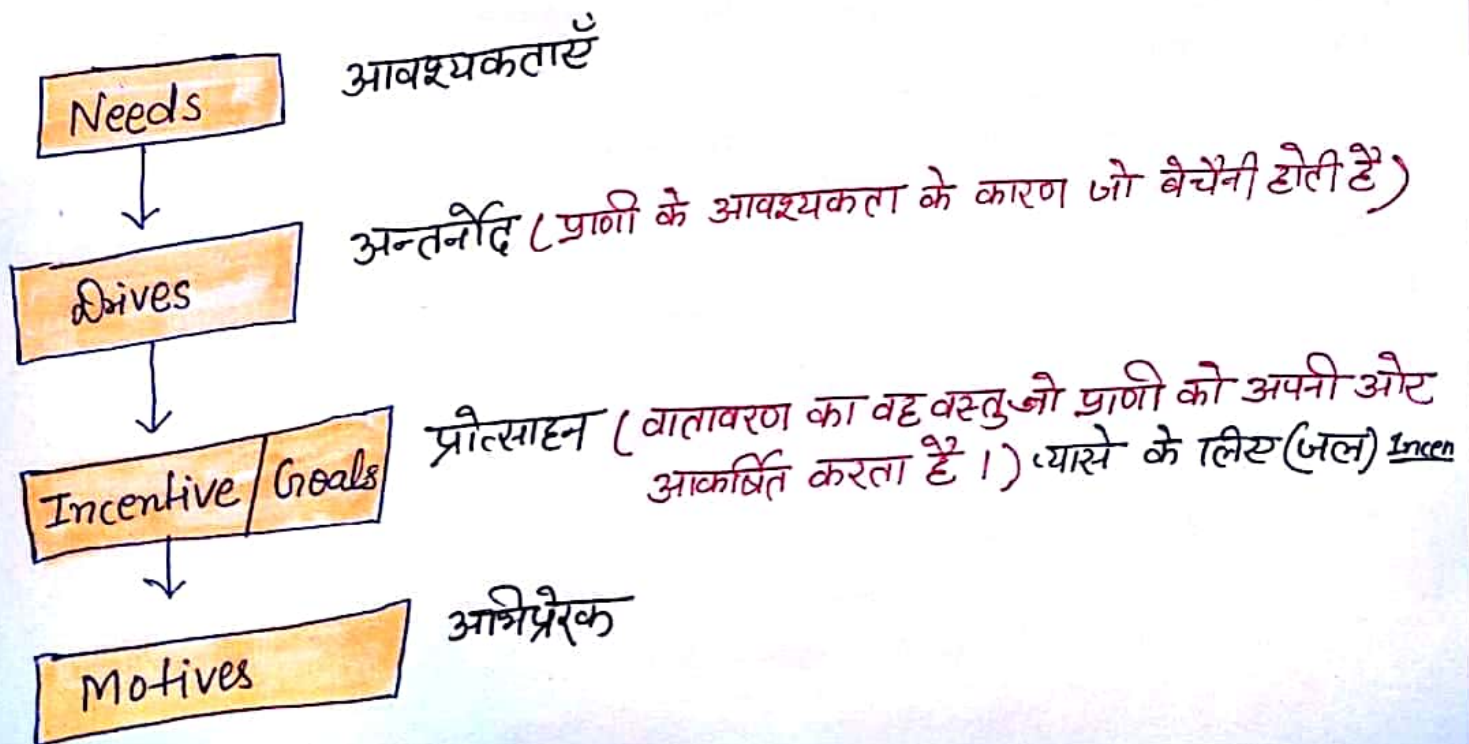
जब हमारे शरीर में पानी की कमी होती है तो प्यास लगती है जब प्यास लगती है तो हम तनाव Create करते हैं फिर चलकर प्याऊ या R.O के पास जाते हैं फिर पीने/खाने की क्रिया (Action behaviour) करते हैं फिर पानी पीने के बाद संतुष्टि मिलती है संतुष्टि के बाद फिर कमी आती है, भोजन की आवश्यकता ----- यानी आवश्यकता अनन्त एवं अनादि होती है।

मान लीजिए आपको भूख लगी है और आप किसी रेस्टोरेंट में जाकर अपनी भूख मिटाते हैं। यहाँ पर भूख व्यक्ति की **आन्तरिक अवस्था (Internal State)** है जिसे बाहर से देखा नहीं जा सकता है। इसे ही मनोवैज्ञानिकों ने **आवश्यकता (Need)** की संज्ञा दी है। यह आन्तरिक अवस्था या आवश्यकता व्यक्ति में कुछ विशिष्ट क्रियाएँ (Activities) जैसे- रेस्टोरेंट या किचन में जाना, भोजन के बारे में इहतास करना आदि उत्पन्न करता है। इस तनाव या क्रियाशीलता की अवस्था को मनोवैज्ञानिकों ने **प्रवृत्ति (Drive)** की संज्ञा दी है। व्यक्ति इवारा की गई यह सभी क्रियाएँ (Activities) कुछ ऐसी होती हैं जो एक निश्चित दिशा में एक **निश्चित लक्ष्य (Goal)** की प्राप्ति की ओर ले जाता है। इस उद्देश्य में निश्चित लक्ष्य भोजन (Food) की प्राप्ति है इसे मनोवैज्ञानिकों ने **प्रोत्साहन (Incentive)** की संज्ञा दी है। व्यक्ति में क्रियाशीलता की अवस्था तब तक पायी जाती है जब तक उसे भोजन प्राप्त नहीं हो जाता है इस तरह से हम देखते हैं कि मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा के स्वरूप की व्याख्या तीन मूल तत्वों (Elements) इवारा की है - **आवश्यकता (Need), प्रवृत्ति (Drive) प्रोत्साहन (Incentive)** इसे मनोवैज्ञानिकों ने **आवश्यकता - अन्तर्निर्दिष्ट - प्रोत्साहन सूत्र (Need - Drive - Incentive - Formula)** भी कहा है।

अभिप्रेरणा की विशेषताएँ (Characteristics of Motivation)

- 1- Motivation is causes of behaviour (व्यवहार का कारण)
- 2- Motivation is goal directed behaviour (लक्ष्य निर्देशित व्यवहार)
- 3- Motivation is purposeful (उद्देश्यपूर्ण होता है)
- 4- Motivation is fuel of body
- 5- अभिप्रेरणा किसी आवश्यकता से उत्पन्न होती है।
- 6- अभिप्रेरणा में भावात्मक उत्तेजना (Affective arousal) पायी जाती है।
- 7- अभिप्रेरणा में व्यवहार की प्रकृति चयनात्मक (Selective) होती है।

Components of Motivation (अभिप्रेरणा के घटक)



(1) Needs (आवश्यकता) - आवश्यकता को Demand भी कहते हैं।
 आवश्यकता वास्तव में Physiological Disbalance अथवा Deficiency की ओर संकेत करती है। जैसे- भोजन की आवश्यकता व्यक्ति को इसलिए होती है क्योंकि भोजन की कमी से शरीर में तनाव उत्पन्न होता है। तनाव को दूर करने के लिए Food के लिए Active होते हैं (क्रियाशील) जब प्राणी (व्यक्ति) के शरीर में किसी चीज की कमी Deficiency या अति excess की अवस्था किसी कारण से उत्पन्न हो जाती है तो इसे Needs कहते हैं। A need is an organic state of deficiency or excess.
 कमी या अति की शारीरिक अवस्था को आवश्यकता कहते हैं।
 जब शरीर की कोशिकाओं में पानी की कमी हो जाती है तब प्यास लगती है प्यास की आवश्यकता पानी की कमी के कारण उत्पन्न हुई। Tissue need
 जब हमारे शरीर से अति excess को नहीं निकाला जाय तो प्राणी का जीवन संकटग्रस्त हो सकता है। जैसे- Urine, Latrine की आवश्यकता eliminative need.

(2) Drive (प्रणोद) - चालक, अन्तर्नोद - व्यक्ति की आवश्यकता ही Drive को जन्म देती है। यह व्यवहार से सम्बन्धित होता है।
 प्रणोद किसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए व्यवहार अथवा क्रिया करने के लिए व्यक्ति को क्रियाशील करता है।
 Drive is an original source of energy, that activates the human organism. प्रणोद शक्ति का मूल स्रोत है जो मानव को क्रियाशील बनाती है।
 जैसे- व्यक्ति में भूख (Hunger) प्यास (thirst), काम Sex आदि शारीरिक आवश्यकता है जो Hunger for Hunger Drive, Thirst for Thirst Drive से उत्पन्न होती है।
 व्यक्ति में कुछ मनोवैज्ञानिक आवश्यकता High levels achievement को sex for Achievement Drive दूसरों पर आधिपत्य जमाने की आवश्यकता Dominance Drive होती है।

(3) Incentive/goal (प्रोत्साहन, लक्ष्य) उद्दीपन :-
 जिस वस्तु से आवश्यकता अथवा प्रणोद की समाप्ति होती है उसे प्रोत्साहन कहते हैं। लक्ष्य या प्रोत्साहन वातावरण का वह वस्तु है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है जिसकी प्राप्ति से व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति तथा प्रणोद Drive में कमी हो जाती है जैसे- प्यास व्यक्ति के लिए पानी लक्ष्य। प्रोत्साहन है। जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है जिसकी प्राप्ति से प्यास समाप्त हो जाती है।
 (आवश्यकता से उत्पन्न होने वाले मानसिक तनाव को Drive कहते हैं)
 भूख, प्यास, काम Sex को (Cyclic need) चक्रीय आवश्यकता कहा जाता है।

(4) अभिप्रेरक (Motives) :-

अभिप्रेरक क्रिया को प्रारम्भ (Initiate) करने, क्रियाओं की गति (Direction) देने तथा उद्देश्य प्राप्ति तक क्रियाओं की निरन्तरता को बनाए (Sustain) रखने का कार्य करती है।
लक्ष्य की इच्छा के कारण ही व्यक्ति अभिप्रेरित होता है।

According to Blair Jones and Simpson

Arising from our needs, motives are the energies which give direction and purpose to behaviour
अभिप्रेरक हमारी आवश्यकताओं से उत्पन्न होने वाली वे ऊर्जाएँ हैं जो व्यवहार को दिशा एवं उद्देश्य प्रदान करती हैं।

According to Mc. Dougall

Motives are condition, physiological and psychological, within the organism that dispose it to act in certain way
अभिप्रेरक व्यक्ति के अन्दर वे शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशाएँ हैं जो उसे एक निश्चित ढंग से कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

Kinds of motives अभिप्रेरक के प्रकार

Motives

Inborn motives जन्मजात

- ① भूख Hunger
- ② व्यास Thirst
- ③ काम Sex
- ④ मलमूत्र त्याग Elimination
- ⑤ नींद Sleep
- ⑥ श्वसन Respiration

Acquired motives अर्जित

- ① Need for achievement
- ② Need for affiliation
- ③ Need for power and status
- ④ Need for aggressiveness
- ⑤ Need of approval motives

उपलब्धि की आवश्यकता
संबन्धन की आवश्यकता
शक्ति या स्तर की आवश्यकता
आक्रमणशीलता की आवश्यकता
अनुमोदन की आवश्यकता

आन्तरिक अभिप्रेरणा तथा बाह्य अभिप्रेरणा

Intrinsic Motivation and Extrinsic motivation

बालको द्वारा किसी पाठ को सीखने में आन्तरिक अभिप्रेरणा एवं बाह्य अभिप्रेरणा का महत्व होता है। शिक्षक को चाहिए कि दोनों अभिप्रेरकों के बीच संतुलन बनाकर रखना चाहिए ताकि सीखने की प्रक्रिया तीव्र हो सके।

आन्तरिक अभिप्रेरणा :- आन्तरिक अभिप्रेरणा से तात्पर्य स्वतः अभिरुचि (Spontaneous interest) से होता है जैसे - कोई छात्र किसी पाठ को इसलिए सीखता है क्योंकि उसमें उसकी अभिरुचि है तथा उस पाठ को सीखने से उसे खुशी (Pleasure) मिलती है। According to Deci 1975

A person's need for feeling competent and self-determining in dealing with his environment is called Intrinsic motivation. वातावरण के साथ समायोजन करके से उत्पन्न आत्म-निर्धार (self-determining) तथा सक्षमता के भाव की आवश्यकता को आन्तरिक अभिप्रेरणा कहते हैं। आन्तरिक अभिप्रेरणा से तात्पर्य व्यक्ति के भीतर से उत्पन्न उस दबाव से होता है जो उसे एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। Intrinsic motivation is the pressure from within the person to behave in certain ways. Schwartz, anxiety, need for achievement, need for affiliation, level of aspiration. - आन्तरिक अभिप्रेरणा के उदाहरण हैं।

बाह्य अभिप्रेरणा :- बाह्य अभिप्रेरणा से तात्पर्य ऐसे प्रोत्साहन (Incentive) से होता है जो छात्र को बाहरी वातावरण में दिया जाता है तथा उसके व्यवहार को एक निश्चित दिशा में मोड़ा जाता है।

According to Schwartz 1977

बाह्य अभिप्रेरणा वह प्रोत्साहन होता है जो व्यक्ति को बाहर से उस व्यक्ति को दिया जाता है। जो एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। जैसे - किसी छात्र को कोई पाठ सीखने के लिए 100 रु० का पुरस्कार दिया जाता है या उसकी प्रशंसा (Praise) की जाती है तो वहाँ 10 रु० या प्रशंसा दोनों ही बाह्य अभिप्रेरणा हैं।

रिली एवं लेविंस 1983-

कार्य पूरा करने के लिए शिक्षक को प्रायः आंतरिक अभिप्रेरणा एवं बाह्य अभिप्रेरणा दोनों को ही प्रोत्साहित करने की जरूरत होगी, परन्तु शिक्षक को इन दोनों के बीच अच्छा संतुलन बनाकर रखना चाहिए।

आन्तरिक अभिप्रेरणा
Intrinsic motivation
नियन्त्रण, Thrust

1) अधिगम सामग्री के महत्व को समझना

2) छात्र को अधिगम के लक्ष्य और कार्यों का चयन का अवसर प्रदान करना

3) छात्र की जिज्ञासा का विकास करना

4) अधिगम के लक्ष्य का निर्धारण होता है।

5) अधिगम को विद्यार्थी की आवश्यकता से जोड़ना।

बाह्य अभिप्रेरणा

Extrinsic motivation
Reward, Verbal reinforcement

1) अपेक्षाओं का स्पष्ट उल्लेख

2) सुधारात्मक feed back प्रदान करना

3) साधारण अधिगम पर भी उपयोगी पुरस्कार देना

4) सामान्य अधिगम सामग्री के मामले में भी उपयोगी पुरस्कार के साथ भागीदारी का अवसर देना।

5) पुरस्कारों की उपलब्धता।